रहे, उसको प्रोत्साहन मिले और इससे कितने ही लोग लाभ उठाते हैं, उसका भी हमें आदर करना चाहिये और उसके लिये जो कुछ हो सकता है करना चाहियें । मैं चाहता हू कि सरकार निश्चित रूप से इस सम्बन्ध में ठोस कदम उठाये ।

आपने आयुर्वेदी के लिये जामनगर मे एक कालेज खोला है । वहा पर अन्वेषक आदि है और अन्वेषण वहा पर होता है । उसके साथ ही साथ आपका यह कर्त्तव्य है कि प्रत्येक राज्य में इस प्रकार के आयुर्वेदी कालेज खुले और उनको आप सहायता दें । यहा पर विभिन्न प्रकार की प्राचीन औषधियो के बारे मे शोध खोज का कार्य भी होना चाहिये और उनके बारे मे निर्णय लिये जाने चाहिये और उनका प्रचार होना चाहिये ।

होम्योपेथी के बारे मे भी यहा कहा गया है । मै समझता हू कि होम्योपेथी दवाइया एलोपेथी दवाइया म निश्चित रूप में सस्ती पडती है । हाम्योपेथी के लिये भी अगर आप एक मैडिकल काउसिल बना दें जो कि डाक्टरो को पजीकृत करे और इस सिस्टम को भी अगर आप पैट्रनाइज करे इसको भी प्रोत्साहित करे तो अच्छा होगा ।

मैं निवदन करना चाहता हू कि जो कुछ मैने कहा है और जो सुझाव दिये है, उन पर आप निश्चित तौर पर विचार करेगे और मैं चाहता हू कि देश के अन्दर ऐसी स्वास्थ्य योजना होनी चाहिये जिस से प्रत्येक देश का नागरिक चाहे वह गरीब हो अथवा सम्पन्न जिसके पास साधन हो या न हो बीमार होने की अवस्था में दवाई ले सके, अपना इलाज करवा सके । यह बात मैं मुख्य रूप से ग्रामीण क्षेत्रो के बारे में कहना चाहता हू । वहा पर खास तौर पर डाक्टरी सुविधायें उपलब्ध होनी चाहियें । वे लोग अधकार में पडे हुये हैं । उनकी उपेक्षा नही होनी चाहिये । जब तक ग्रामीण क्षेत्रो के लिये स्वास्थ्य योजना लागू नही होती है, तब तक स्वास्थ्य मत्रालय यह दावा नही कर सकता है कि वह सफलतापूर्वक अपना कार्य कर रहा है ।

अन्त में मैं परिवार नियोजन के सम्बन्ध में थोडा सा कहना चाहता हू । इसकी बहुत चर्चा होती है और कहा जाता है कि परिवार नियोजन होना चाहियें । इस पर करोडो रुपया खर्च होता है । आप रुपया तो खर्च करते हैं लेकिन आपने बहुत सा स्टाफ रख छोडा है और बहुत सा रुपया इस पर खर्च हो जाता है । इतना होने पर भी आप अभी तक परिवार नियोजन के मामले में सफल नही हुये हैं । देश की आबादी दिन दुगनी रात चौगुनी बढती चली जा रही है । इसके बारे मे जैसा कि एक महिला सदस्य ने भी कहा है हर पहलू से विचार करना होगा । परिवार नियोजन का विषय एक बहुत कोमल विषय है । हमे ग्रामीण क्षेत्रो में लोगो के साथ शिष्ट भाषा में बात करनी होगी ताकि वे ठीक ढग से इस चीज को समझ सकें । अगर हम ऐसा न कर सके तो परिवार नियोजन एक मखौल बन कर रह जायेगा, एक हसी बन कर रह जायेगी । इस वास्ते मैं चाहता हू कि परिवार नियोजन के सम्बन्ध में स्वास्थ्य मत्री एक मनोवैज्ञानिक ढग अपनाये, सही ढग अपनाये ताकि लोग इसको ठीक ढग से समझ सकें । योजना ऐसी नही होनी चाहिये कि उसका परिहास हो ।

इतना कह कर मैं आशा करता हू कि माननीय मत्री महोदय मेरे सुझावो पर विचार करेगे ।

16·26 hrs.

STATEMENT *RE* DOMESTIC SERVANTS

The Minister of Labour and Employment and Planning (Shri Nanda): I have received intimation some time earlier that I might be here to say something on behalf of the Government in relation to the agitation and

[Shri Nanda]

demands of the domestic workers. I do not think I can add very much to the views which I expressed recently, the other day. The question is whether the conditions of these employees are much that we can ignore this problem I do not think so I believe something has to be done to improve the conditions to which these domestic workers are subject. Very probably organised effort on the part of workers themselves will produce some useful results

But there is the further question whether any intervention on the part of Government is called for and whether there should be any legislation at least in respect of some minimum essentials Regarding that also, our viewpoint is, as I said, we shall consider the matter, and I offered to have consultations on this subject. This we propose to do. I cannot say what the outcome will be We propose to explore the feasibility of any kind of regulation regarding any features of the conditions which are brought to our notice But I can say this much that in pursuing this matter we are bound to have full sympathy for the needs and difficulties of the domestic workers I have not anything more to say

Shri S M. Banerjee (Kanpur). I want to know from the hon Minister if this matter can be discussed in the consultative committee as a specific item on the agenda Can the question of the problem of domestic servants be discussed in the consultative committee where this could be thrashed out by discussion between officials and non-officials?

Shri Nanda: That is precisely what I have offered I propose to take it up in the consultative committee and also in the Indian Labour Conference

Mr. Deputy-Speaker: I think for the present that should suffice In view of this statement I hope those advisers who have the interest of the domestic workers will advise them to discontinue this fast that they have undertaken. All of us would be interested in their welfare But, as the Minister has said, this has to be considered in some meeting and there should be future consultations Therefore, I hope now this appeal would go to them and the leaders who are on fast will give up that

Now Shri Radha Raman

16.30 hrs.

DEMANDS FOR GRANTS—*Contd*

MINISTRY OF HEALTH

Shri Harish Chandra Mathur (Pali) Sir, I have a submission to make It is not that I am personally keen to speak on the subject, but I would definitely like to bring it to your notice that nobody from Rajasthan has been given an opportunity on Education, Home Affairs and Health I do wish that I go on record

Mr. Deputy-Speaker: The hon Member is not very correctly informed so far as all these Ministries are concerned, but I will take care that his complaint does not remain unattended to

Shri Harish Chandra Mathur: I wish it to go on record

श्री राधारमण (चादनी चौक) उपाध्यक्ष महोदय, काफी प्रतीक्षा के बाद आप की दृष्टि मुझ पर पडी इस के लिये मैं आप का बडा आभारी हू । स्वास्थ्य मत्रालय की मागो के विषय में जो चर्चा इस समय चल रही है उस पर मेरे पूर्व कई वक्ताओ ने अपने विचार प्रकट किये हैं और उनमें से बहुत से ऐसे हैं जिन से मैं सहमत हू । परन्तु यह सोच कर कि समय का अभाव है और उन को दोहराना किसी हद तक ठीक नही है, मैं सिर्फ उन चन्द बातो की तरफ माननीय मत्री महोदय का ध्यान दिलाऊगा जिन पर अभी तक शायद सदन के सामने कोई विचार